



**HINDI B – HIGHER LEVEL – PAPER 1**  
**HINDI B – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1**  
**HINDI B – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1**

Monday 17 May 2004 (morning)  
Lundi 17 mai 2004 (matin)  
Lunes 17 de mayo de 2004 (mañana)

1 h 30 m

---

**TEXT BOOKLET – INSTRUCTIONS TO CANDIDATES**

- Do not open this booklet until instructed to do so.
- This booklet contains all of the texts required for Paper 1.
- Answer the questions in the Question and Answer Booklet provided.

**LIVRET DE TEXTES – INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS**

- N'ouvrez pas ce livret avant d'y être autorisé(e).
- Ce livret contient tous les textes nécessaires à l'épreuve 1.
- Répondez à toutes les questions dans le livret de questions et réponses fourni.

**CUADERNO DE TEXTOS – INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS**

- No abra este cuaderno hasta que se lo autoricen.
- Este cuaderno contiene todos los textos para la Prueba 1.
- Contesté todas las preguntas en el cuaderno de preguntas y respuestas.

## पाठांश क

## बच्चों ने बनाई फ़िल्म



चार बच्चों का दल पुरस्कार लेने लंदन पहुँचा

जोश, उमंग और दिल में हौसला हो तो कोई काम मुश्किल नहीं और कुछ ऐसा ही कर दिखाया है भारत के कुछ बच्चों ने.

5 बाल फ़िल्मकारों के इस ग्रुप को 'वन वर्ल्ड मीडिया पुरस्कार' के तहत विशेष उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित किया गया है.

इन बच्चों ने ऐसे विभिन्न विषयों पर फ़िल्में बनाई हैं जो बच्चों को प्रभावित करती हैं.

ये पुरस्कार विकासशील देशों में मीडिया के क्षेत्र में की गई ऐसी पहल पर दिए जाते हैं जिन्होंने आम लोगों के जीवन पर प्रभाव डाला हो.



15 ग़ैर सरकारी संगठन 'प्लान' के अनुसार ये पुरस्कार पहली बार बच्चों को दिया गया है जबकि पिछली बार बीबीसी वर्ल्ड सर्विस ने ये पुरस्कार जीता था.

बाल श्रमिकों पर भी बनाई है फ़िल्म

20 ग़ैर सरकारी संगठन की ओर से 'बच्चे कुछ कहना चाहते हैं' नाम से चलाए जा रहे इस कार्यक्रम के ज़रिए ये कोशिश की जा रही है कि बच्चों की आवाज़ सुनी जाए.

इस ग्रुप में काम करने वाले बच्चे 13 से 17 साल के बीच के हैं.

ये बाल श्रम से लेकर बाल विवाह और बाल वेश्यावृत्ति से लेकर नशे की आदत तक के बारे में जागरूकता लाने की कोशिश कर रहे हैं.

25 इस ग्रुप के चार बच्चे ये पुरस्कार लेने लंदन पहुँचे और बीबीसी के दफ़्तर भी आए.

## मुश्किलें

इस पर चारों बच्चों सोनू, सरोज, पीटर और सुधीर का कहना था, "लोग समर्थन नहीं करते. जैसे अगर हम बंधुआ मज़दूरी को लेकर कोई कार्यक्रम बनाएँ तो जो लोग ये करवा रहे होते हैं वे 30 विरोध करते हैं."

मगर ये बच्चे मानते हैं कि सब लोग ऐसे नहीं हैं उनका कहना है कि शिक्षक और बच्चों के माता-पिता उनकी इस काम में मदद करते हैं. 35

बच्चों के जोश का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इन बच्चों ने नशे की आदत से लेकर केबल टीवी के दुष्प्रभाव तक के बारे में काम किया है. 40

मगर फ़िल्म बनाना इतना आसान तो नहीं होता और उसमें तकनीकी योग्यता भी चाहिए होती है.

बच्चों को इस काम में मदद की 'प्लान' संस्था ने जिसने अपनी ओर से कुछ विशेषज्ञ भेजे.

45 इन विशेषज्ञों ने 20 दिन के कार्यक्रम में बच्चों को काफ़ी कुछ सिखा दिया और तब बच्चों ने अपने कला कौशल का कमाल दिखाया.

इन बच्चों को मलाल है कि बच्चों से जुड़े जिन मसलों पर काम किया जा रहा है उसके बारे में खुद बच्चों की राय तो ली ही नहीं जाती और दूसरे लोग बैठे योजनाएँ बनाते रहते हैं. 50

इस बारे में सरोज ने बताया, "जब हमने बच्चों को तंबाकू और पान मसालों के बारे में बाल फ़िल्म महोत्सव में फ़िल्म दिखाई तो बच्चों के एक ग्रुप ने स्थानीय अधिकारियों को चिट्ठी लिखी और उनसे इस बारे में कुछ कार्रवाई करने की माँग की."

55 इसके बाद अधिकारियों ने विद्यालयों के 100 मीटर के दायरे में तंबाकू और पान मसाले बेचने पर प्रतिबंध लगा दिया था.

## पाठांश ब नारेंद्र कोहली की कहानी:

### बरात

सहसा हमारी गाड़ी ही नहीं आगे की सारी गाड़ियाँ रुक गई। पीछे आने वाली सवारियों को भी अकस्मात् ही ब्रेक लगानी पड़ी। यातायात थम गया, जैसे नगर के हृदय का स्पंदन थम गया हो। चारों ओर से भोंपू बजने लगे, जैसे हृदय-गति रुकने से रोगी पीड़ा से चिल्लाया हो। कुछ लोग सवारियों से उतरकर सड़क पर आ गए। पुलिस के सिपाही भी घबराहट में आगे लपकते हुए दिखाई दिए। जाने क्या हो गया था।

मैंने पूछा, “आगे कोई दुर्घटना है?”

“हाँ साहब! बरात है।” उत्तर मिला।

मैं अपने घर से बाहर निकला तो पाया कि ऐन मेरे फाटक के सामने एक गाड़ी इस प्रकार खड़ी कर दी गई है कि मेरे जैसा अनाड़ी ड्राइवर तो दूर, कोई दक्ष ड्राइवर भी प्रयत्न करता तो हमारी गाड़ी बाहर नहीं निकल सकती थी। इस नाकेबंदी का अर्थ समझने के लिए मैं बाहर निकला तो लगा कि थोड़ी देर पहले ही जैसे कोई झंझावात आया था, वर्षा हुई थी और भयंकर रूप से ओले पड़े थे। अंतर केवल इतना था कि आकाश से ओलों के स्थान पर गाड़ियाँ बरसी थीं। सड़क के बीचों-बीच की एक पट्टी छोड़कर चारों ओर गाड़ियों के ढेर लग गए थे। भयंकर चिल्ल-पों मची हुई थी, जैसे किसी भयंकर भूकंप के थम जाने के पश्चात् अपने नष्ट हो गए मकानों के मलबे से निकलकर लोग अपने सगे-संबंधियों को खोजने के लिए, विदीर्ण हृदय की संपूर्ण पीड़ा से चिल्ला रहे हों।

छोटी-छोटी बच्चियाँ, आधे-आधे मन के भारी लहंगों के बोझ को न सँभाल सकने के कारण लड़खड़ा रही थीं। महिलाएँ अपनी कोमलता और सौन्दर्यबोध भूलकर कुछ इस प्रकार गहनों से लदी हुई थीं, जैसे विदेशों से आने वाली संपन्न भारतीय नारियाँ सीमा-शुल्क अधिकारियों को धोखा देने के लिए ढेर सारा सोना अपने शरीर पर लाद लेती हैं।

अनेक पुरुष अपने चेहरों पर राक्षसी हँसी चिपकाए, अपनी पत्नियों, भाभियों, सालियों, बहनों तथा मामियों-मासियों को पकड़ दाँ-बाँ, आगे-पीछे कुछ इस प्रकार धकिया-घसीट रहे थे कि मैं समझ नहीं पाया कि वे उनकी पसलियाँ चटखाना चाहते हैं या हड्डियाँ तोड़ना चाहते हैं। उन्हें पकड़ना चाहते हैं या छोड़ना चाहते हैं...

मैंने घबराकर पूछा, “यह कोई प्राकृतिक विपदा है?”

“हाँ साहब! बरात है।” उत्तर मिला।

#### उदाहरण

सड़क के बीचों-बीच एक गाड़ी रुकी हुई थी। उसके बॉनेट पर शराब १ चार-छह बोतलें खुली हुई थीं। आस-पास खड़ी पुरुषों की भीड़ के हाथों १९ गिलास थे। वे २० बोतलों से ढाल-ढालकर पी रहे थे। न लड़ रहे थे, न चिल्ला रहे थे। बड़े सभ्य ढंग से पी रहे थे। बस, सड़क २१ से हट नहीं रहे थे।

सड़क के किनारे पर खड़ी गाड़ियों की खुली डिक्की से शराब की बोतलों २२ क्रेट झाँक रहे थे। उनके निकट भूमि पर बैठा एक आदमी उल्टी कर रहा था। उसके दोनों ओर खड़े दो व्यक्तियों की सड़क की ओर पीठ थी। लगता था कि वे शायद उसके सुरक्षाकर्मी हैं। वे उससे लगभग सटे खड़े थे। पर निकट जाकर गौर से देखने पर पता चला कि वे उसके लिए चिंतित नहीं थे, वे २३ अपने प्रति न्याय करने के लिए लघु-शंका-निवारण कर रहे थे।

“देश की उदारता की नीति के अंतर्गत क्या सड़क पर बार खुली है?” मैंने पूछा।

“हाँ साहब! बरात आई है।” उत्तर मिला।

पाठांश ग

# खगोल विज्ञान :

## रोजगार के अवसर आकाश में

खगोल विज्ञान को हालांकि दुनिया का सबसे पुराना विज्ञान माना जाता है, लेकिन आज भी इसमें अध्ययन और शोध की प्रचुर संभावनाएं हैं और इसलिए इसमें चमकदार कैरियर बनाने का अवसर है। सितारों और ब्रह्मांड तथा आकाशगंगाओं में रुचि रखने वाले युवाओं के लिए इस क्षेत्र में एक अर्थपूर्ण व संतोषजनक तथा उत्तेजक कैरियर बन सकता है। अंतरिक्ष ने सृष्टि के आरंभ से ही मानव के मन को मोहा है और लगातार जिज्ञासाएं भी उत्पन्न की हैं। यह शोध व विकास तथा तकनीकी व वैज्ञानिक खोजों का भी विषय रहा है। इसमें हमारी पृथ्वी से अनेक प्रकाश वर्ष दूर स्थित ग्रहों का भी अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन कल्पना लोक से भी परे का होता है।

यदि नाम पर जाया जाय तो खगोल विज्ञान को ग्रहों, सितारों तथा असीम ब्रह्मांड में व्याप्त अन्य सभी अस्तित्वों के अध्ययन का विज्ञान है। लेकिन वास्तव में इसका अध्ययन का क्षेत्र उतना ही व्यापक है, जितना यह ब्रह्मांड। कृत्रिम उपग्रहों से नित्य प्रति इतनी जानकारीयां मिलती हैं कि हर रोज अंतरिक्ष के बारे में किसी न किसी नयी खोज का पता चलता है। अंतरिक्ष के बारे में मानव को आरंभ से ही अत्यधिक जिज्ञासा रही है। अब तक इसी जिज्ञासा के कारण अंतरिक्ष के इतने सारे रहस्य खुल चुके हैं तथा इससे कई गुना अभी खुलने वाले हैं।

खगोल विज्ञान की जड़ें २०० ईसा पूर्व

तक हैं। तब अंतरिक्ष विज्ञानियों की तमाम स्थापनाएं निरीक्षण व गणना पर ही आधारित होती थीं। आज वैज्ञानिक उपकरणों व सुविधाओं के कारण यह कार्य अपेक्षाकृत आसान हो गया है। खगोल भौतिक (एस्ट्रोफिजिक्स) इन सब जिज्ञासाओं को शांत करने में सहायता करती है। अंतरिक्ष भौतिकी के अध्ययन से ही अंतरिक्ष विज्ञानी बनने के मार्ग पर अग्रसर हुआ जा सकता है। इसमें विभिन्न ग्रहों-उपग्रहों की रासायनिक संरचना तथा अंतरिक्ष में होनी वाली भौतिक प्रक्रियाओं का पता चलता है। इस क्षेत्र में प्रोफेशनलों के लिए तो पर्याप्त अवसर हैं ही, अमेचर एस्ट्रोनॉमरों का भी यहां स्वागत किया जाता है।

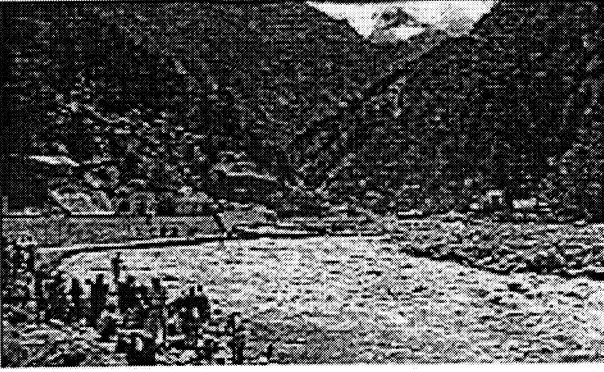
एस्ट्रोनॉमर का कार्य है शोध, वरिष्ठ वैज्ञानिकों की उनके प्रोजेक्टों में सहायता करना, एस्ट्रोनॉमरों के विश्व व्यापी नेटवर्क का एक भाग होना और निरीक्षण, प्रोजेक्टों में शामिल होना है। अमेचर एस्ट्रोनॉमर इसे एक शौक के रूप में लोकप्रिय बनाते हैं। वे इस क्षेत्र में आपसी सहयोग से बात करते हैं। भारत में अंतरिक्ष विज्ञानियों के लिए काफी अवसर हैं। एस्ट्रोनॉमरों को उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों के अनुसार अनेक वर्गों

में विभाजित किया जाता है।



## पाठांश घ

### राजपथ से नहीं जनपथ से बचेंगे वन



हिमालय में जंगल खत्म होते जा रहे हैं

हिमालय में जंगल खत्म होते जा रहे हैं

जंगल मनुष्य के आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के आधार हैं। इसलिए ये अनेक आंदोलनों का कारण भी रहे हैं।

ये सिर्फ हमें भोजन, चारा, जलावन, खाद रेशा, मकान बनाने का सामान ही नहीं देते, ये मिट्टी और पानी को बनाते और रोकते हैं।

हमारे लोक देवता और गीत भी इनसे जुड़े हैं। इनके बिना न खेती संभव है और न ही कुटीर उद्योग।

जंगल ही प्रकृति के अन्य घटकों के साथ मिल कर वन्यता की रचना करते हैं।

जंगल के भीतर वनस्पतियों तथा जंतुओं की एक परस्पर निर्भर, जटिल लेकिन अत्यंत कौतूहल भरी व्यवस्था भी होती है।

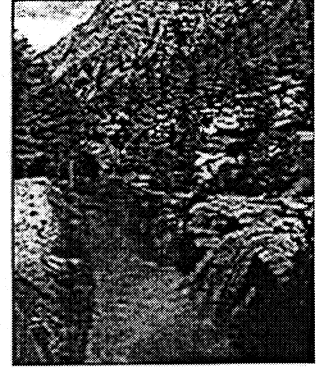
इसीलिए चिपको आंदोलन के समय यह नारा जन्मा था कि "जंगल हमारे प्राण हैं।"

यह जंगल सत्याग्रह के समय के बयान का ही हिस्सा था "जो हमारे जंगल छीनता है, वह हमारे प्राण छेदता है।"

आजादी के बाद जनसंख्या के बढ़ने तथा औद्योगिक दोहन ने न सिर्फ जंगलों पर दबाव बढ़ाया बल्कि एक प्रकार से बहुत से इलाकों से जंगलों का पूरी तरह सफ़ाया हो गया।

यह दबाव बाद में पर्वतीय क्षेत्रों तक भी पहुँचा। पूर्वी-पश्चिमी घाट, सतपुड़ा, विंध्य, अरावली से हिमालय तक जंगलों का सफ़ाया होता गया।

अब राज्य सरकारें भी इस संकट से त्रस्त हैं। जबसे क्लोरो फ्लोरो कार्बन (सीएफ़सी) के कारण ओज़ोन परत में छेद उभरने लगे, तब से विश्व संस्थाओं और राष्ट्रों के चिंताएँ भी बढ़ कर सामने आने लगीं।



भारत में हिमालय के जंगलों का विशेष महत्त्व है। वे न सिर्फ़ बढ़ती आबादी से जंगलों पर हिमालय को अपनी जगह बनाए दबाव बढ़ा रखने में योगदान देते हैं बल्कि उत्तरी भारत की जल और वायु व्यवस्था को नियंत्रित करते हैं।

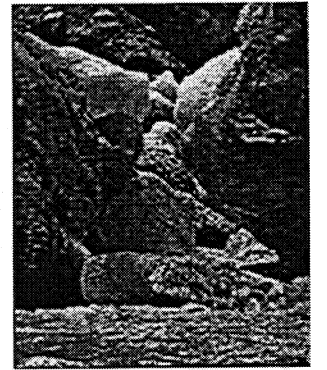
उत्तरी भारत की धरती में बिछने वाली उर्वरता यही जंगल बनाते हैं। पानी की पहली मीनारें यदि हिमालय के ग्लेशियर हैं तो दूसरी मीनारें हिमालय के जंगल हैं।

आज इन पर उद्योगों, जनसंख्या और आधुनिक जीवन-पद्धति का दबाव है। क्योंकि हमने स्वतंत्र भारत में एक स्वतंत्र वन नीति विकसित नहीं की।

राजपथ नहीं जनपथ

देश के कुल 587274 गाँवों में से 170379 गाँवों के पास ही जंगल हैं। देश में कुल 156006 वर्ग किलोमीटर में राष्ट्रीय उद्यान और वन अभयारण्य फैले हैं।

इस तरह वनवासियों का मूल प्राकृतिक क्षेत्र घट गया है। ऐसे में वनवासियों और जनजातियों को केंद्र में रखकर और देश के आम आदमी की ज़रूरत को ध्यान में रख कर ही कोई सही वन नीति विकसित हो सकती है।



हिमालय गंगा का स्रोत है

अगर हम अब तक कि स्थिति का विश्लेषण कर कुछ सीखते हैं तो रास्ता बन सकता है।

और यह सत्य है कि जंगलों को बचाने का रास्ता राजपथ से नहीं सिर्फ़ जनपथ से होकर जाता है।